Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 30thApril 2019, Revised on 12th May 2019, Accepted19th May 2019

शोध–आलेख

# "मैसूर संघर्ष की विवेचना"

* अनिल कुमार सानेल, *शोधार्थी*
डॉ. दौलतसिंह नरूका, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
Email-sanelanil43@gmail.com, Mob.- 8696782162

***मुख्य शब्द-*** *मैसूर, विजयनगर, वाडियार वंश आदि.*

**प्रस्तावना**

मैसूर पहले विजयनगर के अधीन था। 1612ई में विजयनगर के राजा वैंकेट द्वितीय ने मैसूर के राजा वाडियार को राजा की उपाधि दी और इसी के नाम पर मैसूर का वंश वाडियार वंश कहलाया। 18वीं सदी के मध्य तक वाडियार वंश की सत्ता कमजोर एवं निर्बल हो चुकी थी । इस समय तक मैसूर का शासक चिक्का कृष्ण द्वितीय नाममात्र का शासक था जबकि वास्तविक सत्ता देवराज तथा नन्दराज नामक दो भाईयों के हाथ में थी । देवराज मैसूर का मुख्य सेनापति तथा नन्दराज प्रधान राजस्व एवं वितमन्त्री था । मैसूर मराठों तथा निजाम के मध्य में स्थित था । निजाम मैसूर को अपने आधिपत्य में मानता था । वहीं मराठे इन पर निरन्तर आक्रमण करते रहते थे । मराठों ने 1753, 1754, 1757 तथ्सस 1759 ई. में निरन्तर मैसूर पर आक्रमण किये जिन्हें रोक पाने में देवराज असफल रहा । हैदरअली ने असफल्ता का फायदा उठाते हुए अपने मराठा ब्राह्मण मित्र खाडेराव की सहायता से 1761 में श्री रंगपटना पर अधिकार कर लिया जो आगे चलकर मैसूर की राजधानी बना । हैदरअली 1749 में नन्दराज की सेना में शामिल हुआ । अपनी प्रतिभा के बल पर 1749 में डिडीगुल का फौजदार व आगे चलकर 1761 में मैसूर का राजा बना । हैदरअली भारत का प्रथम शासक था जिसने अपनी सेना को यूरोपिय एंढ से प्रशिक्षित किया । हैदरअली का व्यापारिक हितों के चलते ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संघर्ष हुआ । मैसूर का अंग्रेजों से प्रथम संघर्ष 1767 में शुरू हुआ जो 1769 ई. में सन्धि के द्वारा समाप्त हुआ । अंग्रेजों द्वारा साम्राज्य विस्तार व हैदरअली द्वारा उसका विरोध करना ही युद्ध का मुख्य कारण था । युद्ध में अंग्रेजों का साथ दे रहे मराठा व निजाम को हैदरअली ने कूटनीति द्वारा अलग कर हैदरअली ने कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया और अंग्रेजों का हार का सामना करना पड़ा। 04 अप्रैल 1769 को मद्रास की संन्धि हुई और युद्ध समाप्त हो गया । सन्धि के अनुसार अंग्रेजों को काफी हानि हुई जिसके फलस्वरूप जल्द ही द्वितीय युद्ध हुआ । द्वितीय युद्ध 1780 में शुरू हुआ जिसका मुख्य कारण प्रथम युद्ध में हुई हार का बदला लेना था व हैदरअली तथा फ्रांसिसियों के मध्य बढ़ती हुई मित्रता और अंग्रेजों द्वारा मैसूर की सीमा पर स्थित एक फ्रांसीसी बस्ति माहे पर अधिकार करना भी मुख्य कारण था । हैदरअली ने निजाम तथा मराठों को युद्ध में अपने पक्ष में आमंत्रित किया लेकिन इस बार अंग्रेजों ने कूटनीति से उनको अपने पक्ष में ले लिया। 1780 में हैदरअली ने युद्ध की घोषणा कर जनरल बेली को हराकर अरकार (कर्नाटक) पर अधिकार कर लिया । 1781ई. में जनरल आयरकूट ने पोर्टोनोवा के युद्ध में हैदरअली को हरा दिया । 1782 में लड़ते हुए हैदरअली घायल हुआ और 7 दिसम्बर 1782 को हैदरअली की मृत्यु हो गयी ।

हैदरअली की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र टीपू सुल्तान बना व 1 वर्ष तक युद्ध जारी रखा और मार्च 1784 में अंग्रेज अधिकारी लार्ड मेकाटनी ने टीपू सुल्तान के साथ मैंगलोर की सन्धि कर ली और युद्ध समाप्त हो गया। 1784 के पिट्स इण्डिया एक्ट के तहत अंग्रेज कोई भी नया प्रदेश जीतने की कोशिश नहीं करेगा लेकिन तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस ने निजाम व मराठों के साथ मिलकर टीपू सुल्तान के विरूद्ध त्रिगुट का निर्माण किया । 1790 से चले इस युद्ध में 1792 में टीपू सुल्तान को श्री रंगपटनम् खोना पड़ा व मार्च 1792 में श्री रंगपटनम् की सन्धि करनी पड़ी जिसमें टीपू सुल्तान को अपने दोनों पुत्र अंग्रेजों के हवाले करने पड़े व 3 करोड़ रूपये कम्पनी को हर्जाना चुकाना पड़ा ।

1799 ई. में एकबार फिर युद्ध शुरू होता है जिसका तत्कालीन कारण था कि फ्रांसीसी जहाज से 40 व्यक्ति रोजगार की तलाश में मैसूर राजय में आते हैं लेकिन तात्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड वैलेजली ने विदेशी सहायता का आरोप लगाकर टीपू सुल्तान पर युद्ध की घोषणा कर देता है । इस युद्ध में टीपू सुल्तान वीरगति को प्राप्त करता है । वेलैजली ने वाडियार वंश को वापिस मैसूर सौंपते हुए सहायक सन्धि कर लेता है । 1831 में लार्ड विलियम बैटिग ने कुशासन का आरोप लगाकर मैसूर का विलय कर लेता है लेकिन 1881 में लार्ड विपन पुनः मैसूर वाडियार वंश को सौंप देता है ।

''मैं अंग्रेजों को समुद्र तक तो खदेड़ करता हूँ लेकिन मैं समुद्र नहीं सुखा सकता'' – टीपू सुल्तान

**विषय वस्तु**

मैसूर व्यापार व कृषि के क्षेत्र में उन्नत था जिस पर सभी की निगाहें टिकी रहती थी । मैसूर का वाडियार वंश का आधिपत्य था लेकिन कुशल नेतृत्व के अभाव से मैसूर का सेनापति हैदरअली 1761 में अपना आधिपत्य कर लेता है । शुरूवात में निजाम व मराठे मैसूर पर अपना आधिपत्य मातने थे लेकिन हैदरअली ने दोनों को अपने कुशल नेतृत्व के बल पर खदेड़ दिया लेकिन अंग्रेजों नेमैसूर कोअपने अधिपत्य में लेने के लिए बार–बार युद्ध किए व सफल भी हुए । अंग्रेजों ने बार–बार आक्रमण किए जिसमें :–

1. प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध 1767–1769 ई. तक
2. द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध 1780–1784 ई. तक
3. तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध 1790–1792 ई. तक
4. चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध 1799 ई. में और 1799 में अंग्रेजों ने अपना आधिपत्य मैसूर पर कर लिया ।

**निष्कर्ष**

मैसूर राज्य विजयनगर के अधीन आता था लेकिन विजयनगर के राजा वैंकेट द्वितीय ने 1612 में मैसूर राज्य वाडियार वंश को दे दिया था । मैसूर एक सुदृढ़ व उन्नत राज्य होने के साथ–साथ व्यापारिक स्थल भी था ।जिस कारण सभी पड़ौसी राज्यों की निगाहें मैसूर पर रहती थी लेकिन 1761 ई. के बाद मैसूर को कुशल नेतृत्व मिला जिस कारण मैसूर राज्य शक्तिशाली हुआ । फिर भी मैसूर राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी व पड़ौसी राज्यों से युद्ध से जूझता रहा और 1799 में अंग्रेजों ने मैसूर राज्य पर टीपू सुल्तान की हत्या कर अपना आधिपत्य कर लिया ।

**पुस्तक सूची :–** ''मैसूर का बहादुर शेर टीपू सुल्तान'' प्रभासाक्षी, अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2012 ।

**** Corresponding Author:***
**अनिल कुमार सानेल**, *शोधार्थी*
**डॉ. दौलतसिंह नरूका**, *प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष*
*इतिहास संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)*
*Email-sanelanil43@gmail.com, Mob.- 8696782162*